© 2018 IJSRSET | Volume 4 | Issue 4 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र में नवोन्मेष

डॉ. संदीप कुमार मेघवाल
(स्वतंत्र कलाकार)
पता- मु. पो.- गातोड़(जयसमंद), तहसील- सराड़ा,
जिला- उदयपुर, राजस्थान-313905

पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र उदयपुर लोक एवं जनजातीय कला को समर्पित भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के सात सांस्कृतिक संस्थानो मे से एक है। इन सांस्कृतिक केंद्र पर हमे भारतीय लोक संस्कृति की जीवंत परम्परा से साक्षात्कार होता है। आदिम सांस्कृतिक परम्पराओं को ज़िंदा रखना हमारा नैतिक कर्तव्य है क्यूंकी आदिम कला ही समस्त कलाओं की जननी है।

श्चत्य सभ्यता के अंधानुकरण के दौर में इन सांस्कृतिक केन्द्रो की बहुत आवश्यकता है। आज की जीवन शैली बहुत तेजी से बदलती जा रही है। हम अपने अतीत के वैभवशाली लोक आदिम कलाओं से विमुख हो रहे है। ऐसे में पश्चिमी सांस्कृतिक केंद्र जैसे संस्थान से साक्षात्कार कर लोक आदिम सांस्कृतिक वैभव से स्वयं की संस्कृति को अपनाने का प्रण लेते है। आमजन के अलावा खासकर युवा पीढ़ी के लिए तो बहुत महत्वपूर्ण है। पिछले पाँच वर्षो मे मैनें स्वंय ने पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र में शिल्पग्राम के दर्शको मे खासकर युवाओं से पूछताछ के दरमियान जाना कि उन्होने लोक आदिम कलाओं के श्रोत को पहली बार देखा ओर बहुत अच्छा लगा कि भारतीय लोक आदिम कला इतनी समृद्धशाली है। देखकर गर्व महसूस होता है। प्रत्येक दर्शक यहाँ के कलात्मक वैभव से बहुत मोहित होता है। (चित्र संख्या-1)

चित्र संख्या-1

मेरी जानकारी में पिछले कुछ वर्षो से इस केंद्र पर सांस्कृतिक गतिविधियों में कई नवाचार एवं प्रयोग देखे गए जिनके सुखद परिणाम देखने को मिले है। इनमें से मुख्यत प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले शिल्पग्राम उत्सव एवं वहाँ के भौतिक स्वरूप में नवाचार पर ध्यानाकर्षित करूंगा।

चित्र संख्या-2

उत्सव का प्रचार-प्रसार बहुत तेजी से हुआ है जिससे इसकी पहचान न कि देश बल्कि विदेशों तक पहुंची है। प्रचार का मुख्य माध्यम प्रिंट एवं डिजिटल मीडिया के साथ सोसियल मीडिया का प्रयोग विशेष सार्थक रहा। सांस्कृतिक केंद्र के फेसबूक सोसियल वेब पेज से लाइव प्रसारण का लाभ दूर-दराज देशी विदेशी करोड़ो दर्शकों के द्वारा देखा गया।

सोसियल मीडिया क्रांति के साथ ऐसे प्रयोग जरूरी है, जो कारगर साबित हुए। क्यूंकी कलाएं समाज का प्रतिबिंब है और समाज की मुख्य धारा से जुडने के लिए केंद्र को ऐसे प्रयोग करना जरूरी है वर्ना समाज और केंद्र के बीच सम्प्रेषण की दूरी बनी रहेगी। सोसियल मीडिया के सार्थक प्रयोग ने शिल्पग्राम उत्सव में पहुँचने वाले दर्शको का आकड़ा लाखों तक पहुँच दिया है एवं यह प्रतिवर्ष तेजी से बढ़ रहा है।

पिछले पाँच सालों मे सांस्कृतिक केंद्र ने शिल्पग्राम मे प्रतिवर्ष कुछ न कुछ नया कलात्मक प्रयोग करने का चलन भी बनाया जिससे प्रत्येक दर्शक की उत्सव देखने की जिज्ञासा दुगुनी हो जाती है। यहाँ नवाचार एसा देखा गया की लोककला के मूलभूत तत्वों को ज़िंदा रखते हुए दौहरे उधेश्य भली-भाति पूर्ण हो रहे है एवं दर्शको के लिए नया कलात्मक पहलू का बखूबी प्रस्तुतीकरण भी पूर्ण हो रहा है। इन नवाचरों से शिल्पग्राम को देखने की उत्सुकता सदैव बनी रहती है।

उदाहरण स्वरूप पाषाण शिल्प की वाद्य यंत्र मूर्तियों की श्रंखला लाजवाब है। इसमें प्रचलित लोक वाद्य यंत्रो को पाषाण शिल्प कृतियों में गढ़कर शिल्पग्राम के खुले प्रांगण मे स्थापित किया है।(चित्र संख्या-3) **इनके साथ दर्शक सेल्फी फोटोस लेकर सोसियल मीडिया पर बहुत प्रचारित करते दिखाई पड़ते है। शिल्पग्राम में स्कल्प्चर पार्क को भी रचनात्मक विकसित किया है।(**चित्र संख्या-4,6) **केंद्र का यह एक आधुनिक प्रयोगात्मक दृष्टिकोण है जो समाज को लोककला से जोड़ने का कार्य कर रहा है।**

चित्र संख्या-3

असल मे कहूँ तो कलाकृतियों को संग्रहालयों, कला दीर्घा की चारदीवारी से बाहर निकालकर खुले वातावरण प्रकृति के बीच स्वतंत्र खड़ा किया जिससे दर्शक स्वछंद प्रकृति के बीच कला का रसपान

कर सके। जेसे यूरोपीय कला मे प्रभाववादी कला आंदोलनकारीयों ने चित्रकला कक्ष से बाहर निकलकर प्रकृति से सीधा वार्तालाप किया था। शिल्पग्राम 2017 में मेवाड़ की प्रसिद्ध भील जनजाति का नृत्य नाटिका के मुख्य कलाकारों के लाइफ साइज़ पात्रों की मूर्तियाँ खुले मंच पर बड़े क्षेत्र पर स्थापित की गई।(चित्र संख्या-2) इसको हर एक दर्शक ने देखकर बहुत तारीफ़ करते पाया।

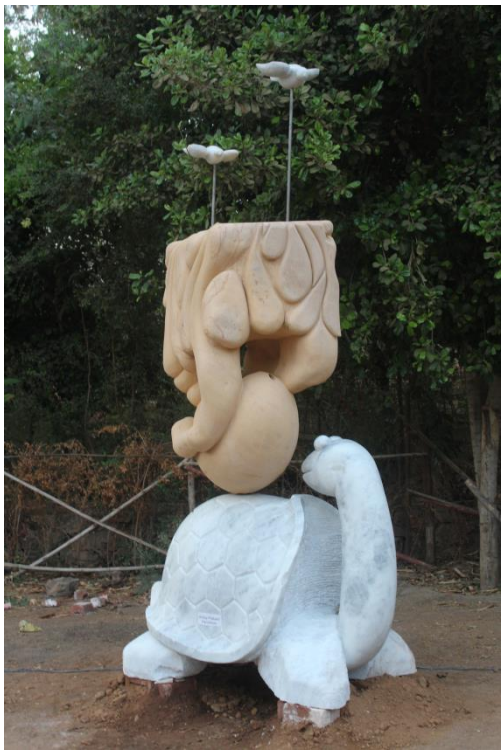

चित्र संख्या-4

दर्शको की पहुँच से दूर एवं आकर्षण का केंद्र नहीं होता। क्यूंकी एसे गंवरी के पात्र ओर भी संग्रहालय मे स्थापित है लेकिन वह दर्शको को ध्यानाकर्षित नहीं कर कर पा रहे है। जबकि शिल्पग्राम मे कला प्रस्तुतीकरण हमे कलाकृति तक दर्शक की सरल-सहज पहुँच का तकनीकी दृष्टिकोण देखने को मिलता है। यह एक मझे हुये तकनीकी दृष्टिकोण पारंगत व्यक्ति ही कर सकते है। प्रयोगो की श्रंखला मे रेत कलाकार की समकालीन विषयों पर आधारित विशाल कलाकृति भी विशेष आकर्षण का केंद्र रही है।(चित्र संख्या-5)

चित्र संख्या-5

केंद्र के लोक सांस्कृतिक भरपूर प्रचार-प्रसार एवं नवाचारों के परिणाम स्वरूप, पाश्चत्य सभ्यता से मोहित हुए भारतीयों का पुनः आग्रह स्वंय की लोककला मे हमे इसका प्रतिबिंब समकालीन परिवेश मे पुनः प्रसारित होते दिखाई पड़ रहा है। आज के आमजन अपने आवास मे, रेस्तराओं मे, सार्वजनिक स्थलों पर तीव्र गति से लोककलाओं का आग्रह हुआ है। इस समझ ने लोगो मे अपनी कला पर गर्व महसूस होने लगा है। एसी समझ विकसित करने का कार्य पश्चिमी सांस्कृतिक केंद्र

का है, क्यूंकी लोककला को सिर्फ देखने मात्र से उधेश्य पूर्ण नहीं होता उनको आत्मसात करना भी जरूरी है। यह कार्य इन दिनों शहरों के शोन्दर्यकरण में तेजी हो रहा है। अब लगने लगा की आमजन पाश्चात्य संस्कृति का तिरस्कार कर स्व की लोक कला मे झाँकने लगे है।

चित्र संख्या-6

केंद्र द्वारा लगातार पेंटिंग, मूर्तिशिल्प, ग्राफिक आधारित कई कलाशिविरों का आयोजन होता रहा है। इन शिविरों में भी कई खास प्रयोग देखने को मिले की नव उदित कलाकारों का ज्यादा से ज्यादा मौका दिया गया। केंद्र की यह क्रांतिकारी सोच भी बहुत रास आई। इसके परिणाम भी सुखद मिल रहे है। युवाओं को भरपूर मौका देने से इन दिनों युवा कलाकारों की नस्ल तैयार हो पाई है। बल्कि आमतौर पर होता यह है कि मोकेपरस्त कलाकारों केंद्र के अतिक्रमण से नव उदित कलाकारों का बीजारोपन नहीं हो पाता यह कुचले जाते है। यहाँ युवाओं को पहले पायदान पर रखकर कला जगत मे सांस्कृतिक नवाचार कर सकारात्मक वातावरण बनाने का कार्य किया गया है। में कहूँगा कि सांस्कृतिक केंद्र ने नवउदित युवा कलाकारों के बीज बोने का कार्य किया है जिसकी फसल आने वाले दिनों में देखने को मिलेगी। क्यूंकी एक कुशल माली का उधेश्य सिर्फ फसल लेने से नहीं होता बल्कि समय पर बीजारोपन पर ध्यान देना भी होता है।

चित्र संख्या-7

में लेखक स्वयं केंद्र द्वारा आयोजित लगभग सभी कला शिविरों के कलाकारों के मिला हूँ एवं वार्तालाप किया वह सभी केंद्र के आयोजनों से बहुत खुश दिखाई दिए परिणाम में उन युवा कलाकारों ने बहुत अच्छा कलाकार्य कर दिखाया है। युवाओं के ज्यादा से ज्यादा प्रोत्साहन के परिणाम हमे अभी से देखने को मिले है जेसे मेवाड़ के नव उदित कलाकार की बात करू तो पिछले कुछ वर्षो से लगातार यहाँ के कलाकारों को राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय, राज्य स्तर पर सेकड़ों पुरुस्कार मिले है। 2018 केंद्रीय ललित कला अकादेमी से श्री पंकज गहलोत को

मूर्तिशिल्प मे राष्ट्रीय पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।(चित्र संख्या-7) **साथ ही हेमंत जोशी, नेमाराम(**चित्र संख्या-8)**, रोकेश कुमार जेसे मूर्तिकारों ने राष्ट्रीय स्तर पर विशेष पहचान स्थापित की है। यहाँ केंद्र के ग्राफिक स्टुडियो से कार्य कर कलाकार विभिन्न आयोजित कला प्रतियोगिता मे पुरस्कार सुरक्षित माने जाने लगे है। उदाहरण पिछले कुछ वर्षो से लगातार राजस्थान ललित कला अकादेमी के राज्य कला पुरस्कार मे यहाँ ग्राफिक से कार्य कर रहे कलाकारों ने अपनी जगह सुनिश्चित कर पुरस्कार प्राप्त किए है। साथ ही पूर्व की तुलना में महिला कलाकारों का भी इन दिनों बहुत इजाफा हुआ है, कलजगत मे कई पुरस्कार प्राप्त एवं प्रदर्शनियाँ कर रही है।**

चित्र संख्या-8

में लेखक स्वंयम भी इस सांस्कृतिक केंद्र से वर्षो से जुड़ा हुआ हूँ यहाँ स्थित ग्राफिक स्टुडियो मे छापचित्रण का कार्य करता हूँ। यहां कार्य करते हुए मैने अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, राज्य स्तर पर खूब सम्मान पुरस्कार प्राप्त किए है। में संस्थान का नवउदित कलाकारों के प्रति सकारात्मक एवं ऊर्जावान सोच के लिए बहुत आभार व्यक्त करता हूँ। आपके द्वारा दी गई सुविधाओं से में यह उपलब्धियां प्राप्त कर सका। बीते कुछ वर्षो से संस्थान के अकादमिक कार्यकाल मे शिल्पग्राम को ओर संस्थान को बहुत ऊंचाई पर छुआ है। उदयपुर के पर्यटन इजाफे एवं लोक कला के प्रसार मे संस्थान के योगदान को सदैव याद किया जाएगा।

संदर्भ-

1. सम्पूर्ण छायाचित्र लेखक द्वारा कलाशिविर एवं शिल्पग्राम का अवलोकन कर स्वंय खिचे हैं।